मीमांसा

डॉ० संदीप कुमार पाण्डेय
डॉ० श्रवण कुमार, ऋचा द्विवेदी

अस्वीकरण

संकल्प प्रकाशन, कानपुर द्वारा प्रकाशित लेखों/शोध पत्रों में व्यक्त विचार योगदानकर्ताओं के अपने हैं। वे आवश्यक रूप से संपादक/प्रकाशक के विचारों को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं। संपादक/प्रकाशक इन लेखों/शोध पत्रों की सामग्री/पाठ से उत्पन्न किसी भी दायित्व के लिए किसी भी तरह से जिम्मेंदार नहीं हैं।

ISBN : 978-93-48772-37-4

प्रथम संस्करण : 31 अक्टूबर, 2025

पुस्तक : **मीमांसा**

संपादक : **डॉ० संदीप कुमार पाण्डेय**

सह संपादक : **डॉ० श्रवण कुमार, ऋचा द्विवेदी**

प्रकाशक : **संकल्प प्रकाशन**

1569/14 नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर, नौबस्ता, कानपुर (उ.प्र.)-208 021

दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872

Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

कॉपीराइट © : डॉ. संदीप कुमार पाण्डेय

मूल्य : **500/- (पांच सौ रुपये मात्र)**

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर-21

आवरण : गौरव शुक्ल, कानपुर

मुद्रक : सार्थक प्रेस, कानपुर

अनुक्रम

१. भारतीय पारंपरिक शिक्षा प्रणाली व एवम नई शिक्षा नीति में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की भूमिका
श्रीमती माधुरी खांडेलकर 11

२. भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुक्रम में गीता के विभिन्न अध्यायों की संक्षिप्त उपयोगी व्याख्या
आनंद कुमार जैन 17

३. मध्यकाल में भक्ति आंदोलन– कबीरदास व मीराबाई के विशेष संदर्भ में
प्रशांत त्रिवेदी, श्रीमती प्रीति त्रिवेदी 22

४. बालिका शिक्षा एवं समग्र विकास
डॉ० हरीश कुमार पाण्डेय 36

५. शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण जागरूकता
डॉ० भुपेन्द्र कौर 47

६. राष्ट्रभाषा के समत्व द्वारा भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं राष्ट्रीयता की पुनर्स्थापना
डॉ. अजय शुक्ल 57

७. भारतीय शिक्षा में ज्ञान मीमांसा एवं तत्व मीमांसा का शैक्षिक दृष्टिकोण
डॉ० मीनू मिश्रा 66

८. भारतीय संस्कृति में राष्ट्र की अवधारणा : एक आध्यात्मिक दृष्टि
डॉ० मौमिता वसु वर 72

९. शिक्षक शिक्षा में मूल्य मीमांसा का मानवीय दृष्टिकोणः एक दार्शनिक एवं व्यवहारिक विश्लेषण
डॉ० श्रवण कुमार 85

१०. मानसिक स्वास्थ्य में मनोविज्ञान की भूमिका
डॉ. मयुर वासुरभाई भम्मर 91

११. मीमांसा और अनुभवात्मक अधिगम का समन्वय
रश्मि, प्रो. हरिशंकर सिंह 109

१२. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में भारतीय भाषाओं और मातृभाषा की भूमिका: भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में
डॉ० रत्नेश कुमार जैन 119

13. Archaeology as a Key to Understanding the Cultural Landscape of India: A Study of the Himalayan Region with Special Reference to Himachal Pradesh
Dr. Om Prakash Kumar 127

५

शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण जागरूकता

डॉ० भुपेन्द्र कौर
सहायक प्राध्यापक–शिक्षाशास्त्र विभाग
आई.एफ.टी.एम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (उ.प्र.)

प्राणियों एवं जीवों का एकमात्र साथी पर्यावरण ही है जिसकी प्रमुखता, महत्त्व एवं सुविधा का ज्ञान जैव–जगत् को पता होता है जब वह किसी कारणवश क्रुद्ध हो जाए। प्रकृति का शोषण करते समय तथा वायुमण्डल में जहरीली गैसों को छोडने से पूर्व मनुष्य यह कभी नहीं सोचता कि इनसे वायुमण्डल दूषित होगा? भारत में पर्यावरण के प्रति जागरूकता आदिकाल से ही रही है। भारतीय विद्वानों ने हजारों वर्ष पूर्व प्राकृतिक व्यवस्था को बनाये रखने का मार्ग सुझाया था। उनका मानना था कि प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करना जीवों के लिए खतरा हो सकता है। यहाँ धरती या मिटटी को माँ, पेड को देवता, जल, हवा और जलवायु को भी देवता मानकर उनकी पूजा की जाता है।

शिक्षा एवं पर्यावरणीय जागरूकता

पर्यावरण जागरूकता हेतु जनचेतना का होना आवश्यक है। चूँकि तब तक पर्यावरण के प्रति प्रत्येक व्यक्ति को सचेत नहीं किया जा सकता है, जब तक कि वह पर्यावरण के प्रति तथा उसके संरक्षण के लिए अपना ध्यान आकर्षित नहीं कर सकता–

(1) **पर्यावरण जागरूकता पर बल**–पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन–जागरूक रहे इसके लिए विश्व में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहता है। ब्राजील के रियोडि–जैनेरो शहर में एक संस्था द्वारा पृथ्वी शिखर सम्मेलन 1992 में 3 जून से 14 जून तक आयोजित हुआ। पर्यावरण जागरूकता के सम्बन्ध में सबसे पहला सम्मेलन 5 जून, 1972 में स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में आयोजित हुआ।

- जलीय संसाधनों की सुरक्षा के उपाय करके जनता को जागरूक करना।

- खनिज संसाधनों की सुरक्षा के उपाय बताकर जन–मानस को जागरूक करना।
- जैव–विविधता के संरक्षण के लिए जनता को जागरूक करना।
- वन–विनाश की समस्या, भू–क्षरण, मरूस्थलीकरण तथा सूखे के बचावों के प्रस्तावों को जनता तक पहुँचाना।
- हानिकारक धुआँ विसर्जित करने वाले वाहनों एवं कारखानों पर रोक लगाकर जनता को जागरूक करना।
- सागरीय क्षेत्रों की रक्षा करना जलीय संसाधनों का उचित उपयोग एवं विकास के उपाय बताकर जनता को जागरूकता प्रदान करना।
- पर्यावरण की सुरक्षा के विषय में बतलाना।

(2) **पर्यावरण जागरूकता विश्वव्यापी होनी चाहिए**–पर्यावरण जागरूकता के लिए चलाये गये कार्यक्रम को संयुक्त राष्ट्र संघीय पर्यावरण कार्यक्रम कहते हैं। यह कार्यक्रम जनता को पर्यावरण के प्रति चेतना प्रदान करता है।

(3) **पर्यावरण जागरूकता प्रकृति की शिक्षा है**–आज के मानव ने पर्यावरण के प्रति संकट उन्पन्न कर दिया है। आज का मानव जीव–जन्तुओं, पेड–पौधों को अपने स्वार्थवश नष्ट करता जा रहा है। आज का मानव चूँकि पर्यावरण की जानकारी से अनभिज्ञ है इसलिए उसे पर्यावरण के प्रति जागरूक रहना पड़ेगा।

(4) **पर्यावरण प्रदूषण सर्व विद्यमान है**–यह समस्या स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर पायी जाती है। विकसित राष्ट्र तथा विकासशील राष्ट्र पर्यावरण प्रदूषण की समस्याओं के सम्बन्ध में हैं, अनेक अन्तराष्ट्रीय सम्मेलनों में इस समस्या पर विचार–विमर्श किया गया है, जिससे कोई ठोस समाधान निकाला जा सके।

(5) **सभी स्तरों की भागीदारी**–पहाड़ी क्षेत्रों में जन्मा चिपको आन्दोलन वृक्षों के प्रति बढ़ती गई चेतना का प्रतीक ही है। गाँव, शहर, जनपद, प्रदेश तथा राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण के प्रति सही जानकारी कर लेने के पश्चात् कुछ ठोस कार्य किये जा सकते हैं, जिससे पर्यावरण की गुणवत्ता में वांछित स्तर तक सुधार लाया जा सकता है।

(6) **जनचेतना**–स्कूल विषयों में पर्यावरण–शिक्षा की पाठ्य–वस्तु को सम्मिलित करने से औपचारिक शिक्षा प्रणाली द्वारा बालकों तथा युवकों में पर्यावरण हेतु चेतना का विकास किया जा सकता है। अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रमों में पर्यावरण–शिक्षा की पाठ्य–पुस्तकों को सम्मिलित किया जा चुका है जिससे सेवारत तथा पूर्व–सेवा के शिक्षकों में सचेतना, बोध, कौशल तथा मूल्यों का

विकास किया जा सके। पर्यावरण–शिक्षा द्वारा इस प्रकार सचेतना का विकास प्राथमिक स्तर से आरम्भ करके विश्वविद्यालय स्तर तक किया जाता है।

(7) **पर्यावरण असंतुलन से समस्यायें**– प्रदूषण पर्यावरण की मूलता को बिगाड़ देता है, प्रकृति को नष्ट कर देता है। ध्वनि–प्रदूषण से उच्च रक्तचाप, कान में दर्द या अन्य बीमारी, चमड़ी में जलन, सिरदर्द, स्मरण शक्ति का ह्रास आदि कई शारीरिक रोग एवं चिड़चिड़ापन, मानसिक तनाव, निराशा आदि भी उत्पन्न होते हैं। कल–कारखानों एवं सड़क दुर्घटनाओं का एक बड़ा कारण सिद्ध हो चुका है कि 120 डेसीबल से अधिक की ध्वनि गर्भवती महिला, उसके गर्भस्थ शिशु, बीमार व्यक्तियों तथा 10 साल से कम उम्र के बच्चों के स्वास्थ्य को अपेक्षाकृत अधिक हानि पहुँचाती है। आज परिवहनों, रेलगाडियों, बसों, ट्रकों, ट्रेक्टरों, वायुयानों से ध्वनि–प्रदूषण होता है। इससे मनुष्यों को कई प्रकार की बीमारियाँ हो जाती हैं तथा व्यक्ति कम सुनने लगते हैं।

(8) **पर्यावरण के अध्ययन की आवश्यकता**– पर्यावरण चूँकि सांस्कृतिक भी होता है इसलिए संस्कृति का क्षेत्र भी इससे प्रभावित हुए बगैर नहीं रह सकता। पर्यावरण क्योंकि भौगोलिक भी होता है अतः भौगोलिक क्षेत्र भी इससे प्रभावित हुए बगैर नहीं रह सकता। विश्व के विकसित देशों में पर्यावरण के प्रति तेजी से जागरूकता उत्पन्न हुई है क्योंकि इन्हीं देशों में पर्यावरण की सबसे अधिक उपेक्षा की गई है। आज विश्व के अनेक विकसित देशों में स्वच्छ पेय जल, साँस लेने के लिए शुद्ध वायु, खाने के लिए अप्रदूषित भोजन और कृषि के लिए विशुद्ध मिटटी का अभाव हो चुका है। पर्यावरण की बढती समस्या ने इसे समझने सुधारने के लिए मानव समुदाय को उत्प्रेरित किया है।

(9) **पर्यावरण परिवर्तन की चेतना**– मनुष्य जिस पर्यावरण में उत्पन्न होता है उसके साथ अंतःक्रिया करके अपने को बदलता है और उसे प्रभावित करता है। मछली का आवास जल है और जल की उपस्थिति के बिना उसकी कल्पना करना कठिन है। कुछ जीव आवास–परिवर्तन में कठिनाईयों को सहन कर लेते हैं, जबकि कुछ का जीवन भी खतरे में पड़ जाता है। जैव जगत् की इसी व्यवस्था को समझने के लिए पर्यावरण का अध्ययन आवश्यक है।

(10) **पर्यावरण प्रकृति का विशिष्ट उपहार**– स्वच्छ और शक्तिशाली बनाने के लिए प्रकृति ने अनेक प्रकार के चक्र स्वयं उत्पन्न कर दिये हैं जिसके कारण पर्यावरण स्वच्छ सुचारू रूप से चलता रहता है। पर्यावरण को

सुचारू रूप से चलाने के लिए मनुष्य अपनी बुद्धि की शक्ति के बल पर पर्यावरण को समझकर उसका सुधार करने का प्रयास करता है। पर्यावरण को बचाने के लिए मानव ऐसी तकनीक का प्रयोग करता है ताकि खराब होते पर्यावरण को रोक सके।

(11) **संतुलित पर्यावरण**– विश्व के बहुत से भागों में पर्यावरण बहुत अधिक असंतुलित हो गया है जिसके कारण जैव–जगत् में शुद्ध पेय जल मिलना कठिन हो गया है क्योंकि स्वच्छ जल के स्त्रोतों में कारखानों के अपशिष्ट पदार्थ बहुत अधिक मात्रा में डाले जाते है, जिसके कारण शुद्ध जल का अभाव है। यूरोप के लोग तो जल के स्थान पर पीने के पानी के लिए फलों का रस, दूध, बियर आदि पेय पदार्थों का उपयोग करते हैं क्योंकि वहाँ पर शुद्ध जल प्राप्त नहीं होता है। धरातल जल के साथ वहाँ पर भूमिगत जल भी प्रदूषित हो गया है। अतः इससे सन्तुलित वातावरण का महत्त्व पता चलता है।

(12) **विज्ञानों के अध्ययन से चेतना पर्यावरण**– आज अधिक उत्पाद, जनसंख्या भार, बढते नगरीकरण उद्योगों के विकास के कारणों की वजह से पर्यावरण का अध्ययन आवश्यक हो गया है। विश्व के अनेक देशों में पर्यावरण के अध्ययन के प्रति रूचि उत्पन्न होने लगी है। आज विश्व के विकासशील देशों में शुद्ध पेयजल, साँस लेने के लिए शुद्ध वायु, खाने के लिए साफ और अप्रदूषित भोजन और कृषि के लिए मिट्टी का अभाव हो चुका है। जिसके कारण जीव–जन्तु और पौधों का जीवन कष्टदायक होता जा रहा है। अतः विज्ञानों के अध्ययन से यह कार्य सम्भव है।

(13) **पर्यावरण तत्त्वों का ज्ञान**– पर्यावरणीय तत्त्व आपसी अंतःक्रिया से उसे संतुलित बनाये रखते हैं। जब प्राकृतिक नियमों के अनुसार पर्यावरण में परिवर्तन होता है तो जीव उसके अनुरूप अपनी व्यवस्था सुचारू रूप से कर लेते है, जब यह परिवर्तन प्रकृति के नियम विरूद्ध होता है तो जीवधारियों का जीवन संकटमय हो जाता है। ऐसी अवस्था तभी प्रकट होती है जब पर्यावरण पर प्रति संवेदनशीलता बढ़ जाती है। मनुष्य अपनी बौद्धिक शक्ति के बल पर्यावरण के परिवर्तन को समझकर उसका सुधार व नियम करने का प्रयास करता है इसलिए पर्यावरण को बचाने के लिए मनुष्य ऐसी तकनीक का प्रयोग करता है कि पर्यावरण को बिगड़ने से रोका जा सके। अतः पर्यावरण के तत्त्वों का ज्ञान आवश्यक है।

(14) **पर्यावरण जीवों का रक्षक है**– खनिज पदार्थ का प्रयोग करते समय मानव यह नहीं सोचता कि वह क्या अनर्थ कर रहा है। वायुमण्डल में

विषैली गैसों को छोडने से पहले वह यह नहीं सोचता कि वह पर्यावरण को कितना दूषित कर रहा है। पर्यावरण के प्रति जागरूकता प्राचीन काल से हो रही है। यहाँ के ऋषि–मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व ही पर्यावरण को स्वच्छ रखने के उपाय बता दिये थे क्योंकि उनका मानना था कि प्रकृति से छेड़–छाड़ करने से मानव को हानि पहुँचेगी।

विद्यालय स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा

शिक्षा पर्यावरण सम्बन्धित कार्यक्रम आरम्भ करके इस उत्तरदायित्व का निर्वाह करने लगी है। भारत की स्वतंत्रता के बाद से प्रौढ–शिक्षा या सामाजिक–शिक्षा जैसे कार्यक्रमों को आरम्भ किया, परन्तु इनसे कोई अच्छे परिणाम नहीं प्राप्त हो सके। अनौपचारिक–शिक्षा के कार्यक्रमों में निम्नांकित कार्यक्रमों को सम्मिलित किया गया है–

(1) **सतत् शिक्षा द्वारा पर्यावरण शिक्षा**–प्रजातांत्रिक जीवन प्रणाली में शिक्षा का विशेष महत्त्व है। भारत की अधिकांश जनसंख्या गाँव में रहती है, उसे शिक्षा की सुविधाएँ नहीं हैं इसलिए निरक्षरता व्याप्त है। संविधान में सभी को समान शिक्षा का विधान है, इसके लिए अनेक कार्यक्रम तथा अभिक्रमों को प्रौढ–शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, निरौपचारिक शिक्षा तथा दूरवर्ती शिक्षा को आरम्भ किया है। इन प्रारूपों के अपने–अपने कार्यक्रम तथा लक्ष्य हैं। इनके द्वारा व्यवसायों की कार्यकुशलता, सामान्य जानकारी तथा सामाजिक समस्याओं की जानकारी पर बल दिया जाता है। अनौपचारिक शिक्षा, घर, परिवार, सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं द्वारा दी जाती है।

शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली एक प्रक्रिया है। यह अधिक महत्वपूर्ण तथा सार्थक है क्योंकि मानवीय ज्ञानवृद्धि तथा विकास तेजी से हो रहा है। कहते हैं कि ज्ञान दस वर्ष में दुगुना होता है और जनसंख्या पच्चीस वर्षों में दुगुनी होती है। शिक्षा पूरी करने के बाद व्यक्ति अपने किसी व्यवसाय तथा उद्योग को जीविकोपार्जन हेतु आरम्भ करता है। निरौपचारिक शिक्षा व्यक्ति को अपनी शिक्षा पूरी करने का अवसर प्रदान करती है। इसके लिये जन–संचार माध्यम कुछ भूमिका निभा रहे हैं परन्तु इसके लिए सतत् शिक्षा का विशेष महत्त्व है। सतत् शिक्षा के कार्यक्रमों द्वारा व्यक्तियों को इस योग्य बनाये रखने का प्रयास किया जाता है कि अपने क्षेत्र, व्यवसाय उद्योग में आधुनिकतम ज्ञान प्राप्त करते रहें और समुचित कौशलों, योग्यताओं तथा अभिवृत्तियों को विकसित करते रहे।

(2) **स्कूली शिक्षा द्वारा पर्यावरण शिक्षा**–भारत में साक्षरता का उत्तरदायित्व प्रौढ़ शिक्षा का है। भारतीय संविधान में समान–शिक्षा के अवसरों का विधान किया गया है क्योंकि प्रजातंत्र के लिए नागरिकों का साक्षर होना

आवश्यक है जिससे संविधान के मूल लक्ष्य समानता, स्वतंत्रता, बंधुता, भईचारा तथा सामाजिक न्याय, प्रगति आदि प्रदान किये जा सकें। एक धर्म–निरपेक्ष तथा श्रेष्ठ प्रजातंत्र राष्ट्र की यह विशेषताएँ होनी चाहिए। यह तभी सम्भव है जबकि राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का पूर्ण विकास किया जाये, जिससे वह अपने कत्तव्यों तथा अधिकारों को समझकर अपनी रूचियों तथा क्षमताओं के अनुरूप जीवन निर्वाह कर सके। भारत में अभी भी एक बडी संख्या में लोग अशिक्षित है इसलिए आवश्यक हो जाता है कि शिक्षा के अन्तर्गत ऐसे कार्यक्रम आरम्भ किये जायें, जिससे उन्हें साक्षर किया जा सके और पर्यावरण–सचेतना का विकास भी किया जा सके।

(3) **सामाजिक–वानिकी द्वारा पर्यावरण शिक्षा**–प्राचीन समय से इस विधि का प्रयोग किया जाता है। आज पर्यावरण प्रदूषण समस्या के कारण इसका महत्त्व बढ़ गया है। जन समाज का सामाजिक वानिकी से भावनात्मक लगाव है। इसके उपयोग में जानवरों को चारा प्राप्त होता है, लकडी ईधन के लिए तथा ऑक्सीजन जीवन के लिए प्राप्त होती है। पर्यावरण की गुणवत्ता भी बनी रहती है। इसी महत्त्व को ध्यान में रखकर हम पर्यावरण शिक्षा के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

विद्यालय स्तर पर शिक्षा द्वारा पर्यावरण जागरूकता

पर्यावरण जागरूकता का प्रारम्भिक स्वरूप उसके उपयोग तक सीमित था किन्तु अब यह बात वर्तमान शताब्दी के उत्तरार्ध से प्रारम्भ होकर पर्यावरण चेतना के विविध स्वरूपों के अध्ययन से सम्बन्धित है तथा यह वैश्विक अभियान के रूप में कारगर किये जाने की संकल्पना का रूप ले रही है। पर्यावरण के प्रति जागरूकता बनाने वाले कार्यक्रम में 'समाज' में विभिन्न वर्ग के लोगों को अपने पर्यावरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों के प्रति संवेदनशील बनाना मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। पर्यावरण में परिस्थिति की असन्तुलन एवं प्रदुषण की परिस्थितियों से परिचित करना तथा इनसे सम्बन्धित समस्याओं की जानकारी देना। यह मानव के पर्यावरण के प्रति मानसिक अनुभूति का परिणाम है। अतः यह स्थायी न होकर परिवर्तित होती रहती है जिसके लिए सही दिशा प्रदान करना आवश्यक है, पर्यावरण समस्याओं के प्रति जाग्रति एवं संवेदनशीलता के विकास से ही पर्यावरण चेतना का विकास होता है। इसके कुछ मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- विद्यालय स्तर पर पर्यावरण चेतना सम्बन्धी फिल्मों, निबंधों, लेखों एवं रिपोर्टों द्वारा प्रसार।

- विद्यालय स्तर पर अपने पर्यावरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों का गहराई से अध्ययन।
- विद्यालय स्तर पर पर्यावरण चेतना का विकसित करने में निरन्तर वृद्धि हुई है। अभी भी भारत की ग्रामीण एवं निरक्षर जनता में पर्यावरण चेतना का पर्याप्त विकास नहीं हुआ।
- विद्यालय स्तर पर पर्यावरण चेतना में विशिष्ट स्थलों के दृष्टान्तों पर बल देना।

अतः इसको जन–आन्दोलन बनाना आवश्यक है। पर्यावरण विषय की सही जानकारी शिक्षकों के माध्यम से दी जा सकती है।

- विद्यालय स्तर पर संचार माध्यमों तथा दूरवर्ती शिक्षा द्वारा पर्यावरण चेतना पर बल, दूरवर्ती शिक्षा का एक विकल्प के रूप में विकास हुआ है जो अपेक्षाकृत वैकल्पिक प्रणाली है। शिक्षकों के प्रशिक्षण में पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में सम्मिलित किया जाये।
- आधुनिक तकनीकी के अन्तर्गत दूरदर्शन जो जनसंचार का सशक्त साधन के रूप में उभरा है इसके माध्यम से पर्यावरण चेतना जाग्रति के लिए कार्यक्रम चलाये जाये तथा प्रचार के तौर–तरीकों में पर्यावरण जागरूकता को ज्यादा महत्त्व दिया जाये, जिससे की जनमानस पर प्रभाव डाल सके एवं संवेदनशीलता विकसित करने में सहायक हो। अध्यापक–प्रशिक्षण का प्रारूप अधिक व्यापक होना चाहिए। पूर्व–सेवा तथा सेवारत अध्यापकों को पर्यावरणचेतना एवं व्यावहारिकता का विकास होना चाहिए। औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा के कार्यक्रमों में पर्यावरण–शिक्षा को सम्मिलित किया जाए। इसके द्वारा इस शिक्षा को जन–जन तक पहुँचाया जा सकता है।

विद्यालय स्तर पर बच्चों हेतु पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम एवं अभियान

पर्यावरण के प्रति जन–जाग्रति सम्बन्धी विभिन्न प्रकार के कार्य सम्पूर्ण विश्व में लोगों द्वारा बड़े उत्साह तथा अभिलाषा लेते हुए किये गये, जिनके परिणामस्वरूप पर्यावरण को स्वच्छ तथा प्रदूषण–मुक्त बनाने पर सफलता प्राप्त हो रही है। भारत में पर्यावरण जन–जाग्रति को आधार मानकर बड़े पैमाने पर विभिन्न कार्यक्रम, आन्दोलन, पुरस्कार, दिवय, कल्याण, बोर्ड, फैलोशिप आदि के रूप में पर्यावरण सम्बन्धी जन–जागरूकता लाने का प्रयास जारी है, ताकि भारत को अच्छे एवं स्वस्थ पर्यावरणीय के रूप में विकसित किया जा सके। आज न केवल भारत में बल्कि सर्व विश्व में पर्यावरणीय जागरूकता पर बल दिया जा रहा है। पर्यावरण उन्नयन सम्बन्धी विभिन्न कार्यो के ही आज मानव जाति का अस्तित्व है इसलिए मानव प्रकृति का संरक्षण करने में निरन्तर प्रयासरत है, ताकि

अपने को भी प्रकृति के प्रति अनुकूल करने में समर्थ हो सके।

पर्यावरण जन–जागरूकता सम्बन्धी विभिन्न अभियानों एवं कार्यक्रमों द्वारा विभिन्न स्कूली बच्चों हेतु क्रियाओं को सम्मिलित किया गया। इनको निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया गया है–

(1) **पर्यावरण सूचना अभियान**–इसके अन्तर्गत सम्पूर्ण देश में दस से अधिक सूचना केन्द्र स्थापित किये गये। इसकी स्थापना 5 दिसम्बर, 1982 में की गई। इन सूचना केन्द्रों का संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम "विश्व सूचना कार्यक्रम" द्वारा राष्ट्रीय सूचना केन्द्र की मान्यता दी गई। यह केन्द्र निम्नलिखित सम्बन्ध मे सूचनाएँ एकत्रित करते हैं जैसे– पर्यावरणीय तकनीकी, परितन्त्र, तटीय पारिस्थितिकि, जहरीले रसायन, विष इत्यादि।

(2) **पर्यावरण सूचना प्रणाली**–पर्यावरण विभाग द्वारा पर्यावरण अध्ययन विषय से सम्बन्धित सेमिनार, पुनश्चर्या, कार्य–गोष्ठियाँ व दृश्य–श्रव्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

(3) **राश्ट्रीय पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम**–इस कार्यक्रम के द्वारा एक माह को पर्यावरण माह के रूप में मनाया गया तथा इसके अन्तर्गत पर्यावरणीय जागरूकता विकसित करने सम्बन्धी विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

(4) **चिपको आन्दोलन**–चिपको आन्दोलन1970 में प्रारम्भ हुआ। गोपेश्वर के नागरिकों के साथ श्री चंडी प्रसाद भट्ट के द्वारा पेडों से चिपककर उन्हें काटने नहीं दिया। इसके बाद श्री सुन्दर लाल बहुगुणा द्वारा चिपको आन्दोलन को अग्रसर किया गया।

1730 ई0 में राजस्थान के जोधपुर जिले के तत्कालीन राजा अभय सिंह को महल बनाने हेतु चूने की भटठी जलाने के लिए लकडी की आवश्यकता पड़ी। उन्होंने जोधपुर जिले के खेजली गाँव के खेजडी वृक्षों को काटकर लाने का निर्देश दिया। यह गाँव जोधपुर से 21 किमी0 दूर दक्षिण–पूर्व में स्थित है। महाराजा के कर्मचारी जब वृक्ष काटने खेजडली पहुँचे तो वहाँ औरतों ने खेजडी के न काटने की विनती की। राजा के कर्मचारियों ने उनकी विनती नहीं सुनी। इस प्रकार औरतें खेजडी के वृक्षों से लिपट गई। राजा के कर्मचारियों ने अपनी कुल्हाडियों से 363 व्यक्तियों को काट डाला। जब राजा अभय सिंह को इस बात का पता चला तो वे तत्काल खेजडी गाँव पहुँचे और वृक्ष काटने का आदेश वापस ले लिया। इस गाँव में इन वृक्षों में इन मृतकों की स्मृति में आज भी एक मेला लगाया जाता है। यह पर्यावरण संरक्षण का एक प्राचीन व उच्च उदाहरण है।

उत्तरकाशी जिले के तिलाडी गाँववासियों ने बीसवीं शताब्दी के तीसरे

दशक में जन–आन्दोलन किया। राजस्थान के खेजली तथा उत्तरकाशी के तिजाडी गाँवों से प्रेरणा लेकर गढवाल हिमालय क्षेत्र में फैले चिपको आन्दोलन से वनों की रक्षा हुई है। गढ़वाल क्षेत्र में इस आन्दोलन की शुरूआत रैनी नामक गाँव से हुई। इस गाँव के स्त्री पुरूषों द्वारा वन ठेकेदारों व सिपाहियों के साथ संघर्ष करते हुए वृक्षों को बचाते हुए चिपको आन्दोलन का जन्म हुआ। चिपका शब्द महिलाओं की भावनात्मक पुकार थी, जोकि वृक्षों के बचाव हेतु संघर्ष करते–करते मुँह से निकला।

इसमें कोई संशय नहीं कि चिपको आन्दोलनकारियों ने वनों से पर्यावरणीय महत्त्व की जानकारी जनसाधारण तक पहुँचाई है। कर्नाटक का 'अप्पिको' आन्दोलन भी चिपकों आन्दोलन जैसा ही है। देश में आज वनों की रक्षा के लिए अनेक स्वयंसेवी संस्थाएँ कार्य कर रही हैं।इनके अल्मोडा जिले का 'पर्वतीय युवा मोर्च' वन चेतनस जगाने के लिए पदयात्रा और वृक्षारोपण शिविरों का आयोजन करता है। आंध्रप्रदेश में 'भुागवतुल्ला चैरिटेबल ट्रस्ट' बाँस, सफेद, काजू, नारियल, बाबूल और कई प्रकार की घासों को उगाने की प्रेरणा देता है। गोविन्दपुर (मिर्जापुर) का 'वनवासी सेवा आश्रम' सामाजिक वानिकी कार्यक्रम संचालित कर रहा है। 'पीपुल्स इन्स्टीट्यूट फॉर पार्टिसिपेटरी ऐक्शन रिसर्च' नामक संस्था ने ओडिसा के धेनकनाल जिले में वनवासियों को वृक्ष काटने वालों के विरूद्ध संगठित किया है। गुजरात में 'सेवा' नामक संस्था ने गिरनार पर्वत की लकडहारिनों को संगठित किया है। ओडिसा के कालाहांडी क्षेत्र में 'दि फ्रेण्ड्स एसोशिएसन फॉर रूरल रिकंस्ट्रकशन' संस्था भी वनों की रक्षा के लिए कई कार्यक्रम चला रही है।

(5) **खेजली आन्दोलन**–इस आन्दोलन का सूत्रपात सन्त जाम्मेश्वा महाराज द्वारा किया गया। इनके पेड या वृक्षों को काटना तथा जीवों की रक्षा करने सम्बन्धी नियम भी थे। इन नियमों में पालन करने वाले अनुयायी 'विश्नोई' कहलाये। 363 विश्नोई महिलाओं ने पेड़ न काटने देने के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर इस आन्दोलन को अग्रसर किया तथा जनता में एक विशेष प्रकार की जाग्रति विकसित की गई।

(6) **अप्पिकों आन्दोलन**–इसकी शुरूआत एक योजना द्वारा पर्यावरण संरक्षण के रूप में की गई जो बाद में वनों में पेंगें की कटाई न करने से जुड गया। यह लगभग एक माह 10 दिन तक चलाया गया। इसके द्वारा भी लोगों में पर्यावरण सम्बन्धी जाग्रती हुई।

सन्दर्भ

- सक्सेना ए0 बी0 (डॉ), (1999) : पर्यावरण शिक्षा आर्य बुक डिपो, 30, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली।
- चौरसिया आर0 ए0, (2000) : पर्यावरण शिक्षा के मूल तत्व, साहित्य प्रकाशत, आगरा।
- 'वत्स' मिश्रा सन्ध्या (डॉ), (2012) : पर्यावरण शिक्षा (वर्तमान समय की आवश्यक आवश्यकता) आर0 लाल बुक डिपो।
- रूहेला, सत्पाल (डॉ), (2012): विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
- आजाद कुमार राकेश (डॉ), गीता (2013) : पर्यावरणीय अध्ययन, आर लाल बुक डिपो मेरठ।
- भटनागर ए0 बी0 (डॉ), भटनागर अनुराग (डॉ), भटनागर नीरू (डॉ) : पर्यावरण शिक्षा, आर लाल बुक डिपो मेरठ।

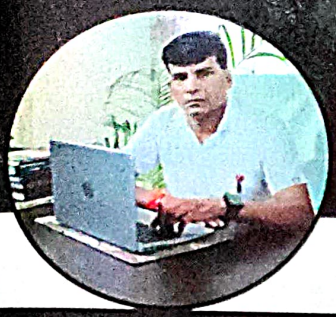

संपादक परिचय

डॉ० संदीप कुमार पाण्डेय

शैक्षिक योग्यता : एम०ए० (प्राचीन इतिहास, समाजशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र), पीएच०डी०

प्रकाशित पुस्तकें : 1. जैन पुराणों में समाज 2. भारतीय सामाजिक व्यवस्था 3. प्राचीन भारत में शिक्षा व्यवस्था 4. भारतीय शिक्षा का इतिहास 5. सामाजिक वैचारिकी 6. राष्ट्र निर्माण में महिलाओं का योगदान 7. व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण 8. मूल्य आधारित शिक्षा व आधुनिक तकनीकी 9. संस्कृति संचय 10. भारतीय ज्ञान परंपरा व संस्कृति संधान 11. भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध संदर्भ 12. उच्च शिक्षण संस्थानों में व्यावसायिक शिक्षा का महत्व 13. शिक्षा एवं विरासत 14. भारतीय सामाजिक व्यवस्था 15. संस्कृति प्रवाह 16. समकालीन भारत एवं शिक्षा 17. भारतीय कला व संस्कृति 18. समकालीन भारतीय समस्याएं एवं समाधान 19. सामाजिक विकास 20. शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण 21. जनजातीय समाज व संस्कृति 22. समकालीन विकास के मुद्दे एवं चुनौतियाँ 23. समकालीन राजनीति मुद्दे 24. सामाजिक अभिव्यक्तियाँ 25. एकात्म मानववाद के प्रणेता : पं. दीनदयाल उपाध्याय 26. संस्कृति संकलन 27. विकसित भारत @ २०४७ : चुनौतियां व संभावनाएं 28. शारीरिक शिक्षा, स्वास्थ्य व योग 29. भारतीय सांस्कृतिक अग्रदूत स्वामी विवेकानंद 30. अन्वेषणा 31. शोध प्रविधि-1 32. अभ्युदय 33. शोध प्रविधि-2 34. शोध प्रविधि-3 35. शिक्षा का परिचय 36. समाजशास्त्र परिचय 37. शारीरिक शिक्षा, स्वास्थ्य व योग-2 38. प्रयागराज महाकुम्भ : आस्था व आध्यात्म का महापर्व 39. RESEARCH DRISHTI 40. भारतीय शिक्षा का इतिहास व विकास 41. भारतीय शिक्षा का विकास 42. भारतीय संस्कृति व पर्यावरण संरक्षण 43. ज्ञानवृत्ति 44. भारतीय शिक्षा के विविध आयाम 45. भारतीय समाज : संरचना एवं परिवर्तन 46. वरिमा 47. प्राचीन भारत का सामाजिक व आर्थिक इतिहास 48. समावेशी शिक्षा 49. समावेशी शिक्षा : दशा व दिशा 50. अनुसंधान 51. शोध विमर्श 52. इतिवृत्त 53. भारत में शिक्षा का विकास 54. आर्टिफिशियन इंटेलिजेंस : उपयोगिता व चुनौतियाँ 55. कृत्रिम बुद्धिमत्ता: उपयोगिता और चुनौतियाँ

अवॉर्ड : 1. उत्तराखण्ड राज्य स्तरीय कला प्रतिभा सम्मान-2022
2. अवगत अवॉर्ड-2022, 3. शिक्षा भूषण सम्मान-2023
4. उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान-2024

संप्रति : व्याख्याता- एस०आई०आई० कॉलेज, उत्तराखण्ड
पूर्व सहायक कुलसचिव (शोध) भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर

मोबाईल : 8949193307

संकल्प प्रकाशन
1569/14, नई बस्ती बक्तौरीपुरवा
बृहस्पति मन्दिर, नौबस्ता, कानपुर-208021
Mob. : 70077-49872, 94555-89663
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

Also available at : flipkart

ISBN 978-93-48772-37-4

9 789348 772374 >

₹500/-